साध सतनामी मेला फरूखाबाद ने नया इतिहास बनाया

ज्ञात हो कि विगत **19** मार्च **2008** से यह समाचार लिखते तक फरूखाबाद में सतनामी मेला चल रहा है। इस मेला में सतनामियों ने नया इतिहास इतिहास बनाया। सन **1672** में सतनामियों ने औरंगजेब जैसे नृशंस शासक के विरूद्ध विद्रोह का बिगुल बजाया था। यह लड़ाई सन **1718** तक चलता रहा लेकिन सतनामी मरते रहे पर शाही फौज के सामने सिर नहीं झुकाया और अन्त मे औरंगजेब द्वारा सतनाम के रास्ते पर चलने का शाही फरमान जारी किया तब कहीं जाकर सतनामियों ने अपनी तलवारें मयान में डाल ली। इस लंबी लड़ाई के कारण सतनामी यहॉ वहॉ विखर गये। इस बात की प्रमाण आज फरूखाबद में नारनौल से आये एक सतनामी संत ने खुली जुवान से वताया।

इतिहास इस बात का साक्षी है कि महान सतनामी सन्त बीरभान के अगुआई में नारनौल मे औरंगजेब के खिलाफ सतनामी विद्रोह हुआ था। औरंगजेब ने जजिया कर लगा कर अन्य सभी धर्मावलंबियों को प्रताड़ित करने का प्रयास किया था। किन्तु सारा हिन्दु समाज जजिया कर देते हुए चुपचाप वर्दाश्त करता रहा लेकिन सतनामियों ने खुला विरोध किया। सतनामियों ने सत के रास्ते पर चलने के लिए किसी भी तरह का कर देने से इनकार कर दिया। सतनामियों ने औरंगजेब को संदेशा भेजा कि वे यदि इस बात को स्वीकार करले कि मुसलमान असत के रास्ते पर चल रहे हैं तो उन्हें कर देने में आपत्ति नहीं होगी। औरंगजेब को यह फरमान भारी पड़ा और शाही फौज भेज कर सतनामियों को दबाने का प्रयास किया।

सतनामी किसी ताकत के सामने नहीं झुकता और शाही फौज के सामने घुटना टेकने के बजाय सत के लिए संघर्ष करने को तैयार हो गये। लड़ाई का मुख्य केन्द्र नारनौल के पास नसीवपुरा से शुरूआत हुआ। यह लड़ाई सन् **1672** से सन् **1718** तक चला। इस लड़ाई में **5000** से ज्यादा सतनामी शहीद हुए। सतनामियों ने मरते दम तक औरंगजेब की सेना का पीछा किया। उसका सेनापति मारा गया और तंग आकर स्वयं औरंगजेब ने युद्ध का कमान संभाला। अंततः औरंगजेब ने सतनाम के रास्ते चलने का शाही फरमान जारी किया तब जाकर सतनामी विद्रोह कम हुआ।

इस लड़ाई में सतनामी संगठन काफी हताहत हुआ और बाद में औरंगजेब ने अलग अलग बदला लेना शुरू कर दिया। फलस्वरूप सतनामी बिखर गये और पीलीभीत, काठगोदाम की ओर जा बसे। कुछ सतनामी उत्तरभारत से होते हुए उड़ीसा, झारखण्ड होतु हुए छत्तीसगढ़ की ओर जा बसे। यह बात **24** फरवरी **08** को साध सतनामी मुख्यालय रोहट में नारनौल के पास कोसली से आये हुए सतनामी साध श्री वीरेन्द्रसिंह यादव ने बताया था। श्री यादव से पूछे जाने पर उन्होंने अपने को गर्व से सतनामी बताया। श्री यादव ने यह भी बताया कि डा. के सी यादव प्रोफेसर कुरूक्षेत्र विश्व विद्यालय ने हिस्ट्री आफ हरियाणा में पी एच डी किया है सतनामी विद्रोह पर विशेष अध्ययन किया है। इसी तर्ज पर नारनौल के सतनामी संत जिनकी तस्वीर दी गयी है आपने बताया कि सतनामी मरते कम और मारते ज्यादा थे जिससे शाही फौज में हड़कम्प मच गया और औरंगजेब को शाही फरमान जरी करना पड़ा।

साध सतनामी में सन्त बीरभान के अलावा सन्त उदादास व सन्त कबीर का नाम सत्तअवगत के रूप में विशेष श्रद्धा से लिया जाता है। सन्त उदादास के नाम पर रेवाड़ी करीना रोड स्थित जनाबाद में भण्डारा चलता है। यह भी बताया जाता है कि सतनामी विद्रोह में राज नंदराव की अगुआई में यादवों ने महत्वपूर्ण भूमिका निभायी जो स्वयं को सतनामी कहते थे। सतनामी सन्त बीरभान का ध्यान स्थल नारनौल के पास धौसी पहाड़ी में आज भी मौजूद है जिसे साधना (ध्यान) स्थल के नाम से जाना जाता है।

दिनांक 19 से 24 मार्च 08 तक फरूखाबद में साध सतनामियों मेला लगा हुआ है। वहॉ चौकी में सुवह दोपहर व शाम तीनों पहर विशाल सत्संग लगता है। फरूखाबाद को सतनामियों का गढ़ माना जाता है। रोहट हरियाणा से आये साध सतनामी भाई दयानंद , रायसिंह व चौधरी तारीफसिंह सतनामी के अलावा आस पास के कई गावों से सतनामी यहॉ आये हुए थे। राजस्थान दिल्ली पंजाब गुजरात से भी काफी तादाद में सतनामी यहॉ आये हुए थे। विशेष ऐतिहासिक घटना यह हुआ कि इस अवसर पर छत्तीसगढ़ सतनामी शाखा से गुरू घासीदास के अनुयायी खासकर श्री टी. आर. खुन्टे डा. शंकरलाल टोडर श्री यशवन्त सतनामी श्री सियाराम लहरे व श्री आर एस टंडन वहॉ मेला में पहुंचे थ तो दूसरी ओर बाराबंकी कोटवाधाम शाखा से सतनामी महंत श्री कमलेशदास जी व हरिप्रतापदास जी भी इस मेला में आये थे।

इतिहास ने हम सबको 500 साल बाद एकबार फिर से हम सबको जोड़ दिया कि पहले बार तीन प्रमुख सतनामी शाखा से लोग एक साथ एक जगह शामिल हुए। इससे पहले केवल कागजों में शाखा का पता चलता था लेकिन अब भारत भूमि के कोने कोने से इस मेला में सतनामियों ने एक साथ मिला। इसका श्रेय श्री दिनेश भाई व श्री नरेद्रशाह को जाता है जिन्होंने विशेष पहल कर पूरे देश के सतनामियों को एक साथ एक मंच पर लाने का प्रयास किया। वे सभी बधाई के पात्र हैं।

सभा के प्रारंभ में सामूहिक बन्दना किया गया। तत्पश्चात कुछ प्रमुख लोगों ने सतनाम व निर्वाण पर अपना विचार रखे तथा जीवन को सुगम व सरल कैसे बनाया जाय विषय पर अपना सन्देश सुनाये। सत्तअवगत (सत को व्यक्त नहीं किया जा सकता वह अजन्मा निराकार निर्लेप निर्गुण है इसलिए सतअवगत कहते हैं) के अलावा चौकी में किसी का मूर्ति देखने को नहीं मिला। निर्गुण एक रहित साध सतनामी किसी का मूर्ति पूजा में विश्वास नहीं रखते इसका जीता जागता नमूना देखने को मिला। यहॉ तक अपने गणमान्य गुरू की भी कोई प्रतीक चिन्ह दखिने को नहीं मिलता। सतनाम भवन को ये चौकी कहते है। सतनामियों में किसी को प्रणाम नहीं किया जाता वे केवल सत्संग के समय दण्डवत शब्द का उच्चारण करते हैं या सतनाम शब्द का प्रयोग करते हैं। सतनामी सन्तों ने जाति –धर्म अथवा कुल – वर्ण के बजाय उपलब्धियों को सराहा। फरूखाबाद जो साध सतनामियों का गढ़ माना जाता है।

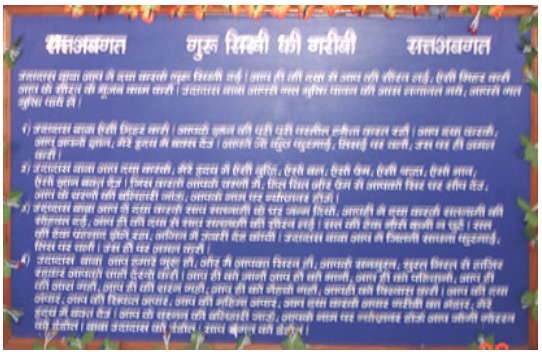

विशेष बात देखने को मिला वह यह कि लोग सतनाम के प्रति काफी आदरवान देखे गये और अगन्तुकों का बड़े प्यार से स्वागत करते पाये गये। गुरू घासीदास के शब्दों में अपन घट ही के देव ला मनाबो की तरह साध सतनामी भी ईश्वर बाहर नहीं बल्कि आपके अपने भीतर स्थित है उसे जगाओ, पहचानो यही असली महानता है। वह सुन सकता है, वह बोल सकता है, वह अनुभव कर सकता है। इस दौरान गिरौदपुरी व गुरू घासीदास के विषय में जानने की उत्सुतता पायी गयी और मान्यता, पूजा पद्धति, मेला तथा पंथी नृत्य के बारे में जानकारी ली।

भोजन की उत्तम व्यवस्था के साथ घर घर स्वागत के लिए तत्तपर था यह छत्तीसगढ़ से आये इंजिनियर खुन्टे व डा. टोडर ने गांव को घर घर घूम कर देखा व अनुभव किया। ऐसा लग रहा था कि **500** सौ साल बाद सतनामी भाई फिर से आपस में मिलकर एक हो गये हैं।

इस अवसर पर भण्डारा लगा था जिसमें किसी आदेश या व्यवस्था के बजाय लोग स्वयं सेवारत मिले। समाज के लोग अपनी श्रद्धा से भंडारा की व्यवस्था करते हैं तथा इस बीच किसी एक दिन सामूहिक भण्डारा होता है जिसके लिए सामूहिक फन्ड का उपयोग होता है।

इस अवसर पर सामूहिक निर्णय लिया गया कि राष्ट्रीय स्तर पर भिलाई में दो दिवसीय ऐतिहासिक सतनामी मिलन समारोह दिनांक **27** व **28** अप्रेल **08** को आयोजित किया जायेगा जिसमे अन्य राज्य जो अब तक सीधा संपर्क में नहीं आये हैं जैसे राजस्थान के खासकर सबला पंथी सतनामियों, बिहार, झारखंड, उड़िसा, बंगाल, आसाम आदि राज्यों में निवास कर रहे सतनामी बाइयों को भी मिलन समारोह में आमंत्रित किया जायेगा।

आइये हम सभी सतनामी जन अपने परम आदरणीयों का सम्मान करे तथा उनके सतनाम पन्थ की सपना को साकार करने में सहाभागी बनकर अपना अमूल्य योगदान करें।

द्वारा ः सतनाम कल्याण व गुरू घासीदास चेतना संस्थान